International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030, Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 3; May 2017; Page No. 275-278

छन्द : समीक्षा में प्रतिपादित छन्दोगणित की प्रासंगिकता

रवि कुमार मीना

शोध छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत।

सारांश

संस्कृत साहित्य का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ वेद है। वेद के छः (शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द) अङ्गों में एक छन्दःशास्त्र जिसे वेदों का पाद कहा गया है। वेद के गूढ अर्थ को जानने के लिये छः वेदाङ्गों में छन्द का अन्यतम स्थान है। छन्दः शास्त्र की आचार्य परम्परा में पिङ्गल, भरत, केदारभट्ट, हेमचन्द्र, गङ्गादास आदि के ग्रन्थों की महत्ता सुज्ञात है। छन्दःसमीक्षा के अन्तर्गत छन्दःशिक्षा, छन्दोगणित, छन्दोनिरुक्ति, छन्दोव्याकरण और छन्दःकल्प आदि प्रमुख विषयों का विवेचन किया गया है। आधुनिक विद्वान् पण्डित मधुसूधन ओझा ने उक्त विषयों की समीक्षा अपने ग्रन्थ छन्दःसमीक्षा में की है। उक्त ग्रन्थ का द्वितीय अंग छन्दोगणित है जिसमें प्रस्तार, नष्ट इत्यादि प्रत्ययों को विस्तार से बताया गया है। इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य छन्दःसमीक्षा में प्रतिपादित छन्दोगणितीय अध्याय का विस्तार से विश्लेषण करना है (ओझा, 1991)। संस्कृत छन्दःशास्त्र का एक प्रमुख अङ्ग प्रत्यय है। छन्दःसूत्र में समवृत्त, अर्धसमवृत्त तथा विषमवृत्त आदि आवश्यक वृत्तों को बताया गया है लेकिन अनेक छन्दःशास्त्र के विद्वानों ने इनके अतिरिक्त भी छन्दों को स्वीकार किया है। उन अतिरिक्त छन्दों के ज्ञान के लिए प्रत्ययों का वर्णन किया गया है (शर्मा, 1909)। इसी आधार पर छन्दों से युक्त ग्रन्थों के रचयिता तथा शास्त्रों में निपुण आचार्यों ने अपनी कृतियों में प्रत्ययों का वर्णन किया है।

मूल शब्द : संस्कृत साहित्य, वेद, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष और छन्द।

प्रस्तावना

छन्द से सम्बन्धित जिन नियम विधियों के द्वारा छन्दों के भेदादि का ज्ञान कराया जाता है, उसे प्रत्यय कहते हैं।[1] प्रत्ययों से सम्बन्धित एक और परिभाषा प्राप्त होती है, वे विधियाँ जिनके माध्यम से छन्दों की सङ्ख्या और भेदों का ज्ञान कराया जाता है, उन्हें प्रत्यय कहते हैं[2] (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। वृत्तरत्नाकर के रचयिता आचार्य केदारभट्ट (जन्म 1000 ई. पूर्व) ने प्रत्ययों के 6 भेदों का वर्णन किया है। छन्दःशास्त्र एवं वृत्तरत्नाकर में 6 प्रत्यय क्रमानुसार इस प्रकार बताये गये हैं[3]– प्रस्तार, नष्ट, उद्दिष्ट, लगक्रिया, सङ्ख्यान तथा अध्वयोग (उपाध्याय एवं त्रिपाठी 2012 तथा द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। छन्दःसमीक्षा के गणितीय अध्याय में जिन प्रत्ययों का उल्लेख हुआ है, उनको यहाँ विस्तार से बताया गया है।

प्रस्तार

किस छन्द के कितने भेद सम्भव हैं इस बात का ज्ञान जिस प्रणाली से होता है उसे प्रस्तार कहते हैं। छन्दःशास्त्र में किसी भी छन्द का किस–किस तरह से विभाजन हो सकता है या किस क्षेत्र तक हम उसका विस्तार कर सकते है, अर्थात् समसङ्ख्या में प्राप्त अक्षर या मात्रा वाले छन्द के कितने भेद हो सकते हैं। इस प्रकार उन सब भेदों को जानने की विधि का विवेचन करना प्रस्तार कहलाता है[4] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012)। प्रस्तार का सामान्य अर्थ "विस्तार" है। आचार्य हेमचन्द्र ने अपने छन्दोऽनुशासन में प्रस्तार को इस प्रकार परिभाषित किया है[5] (मिश्र, 2006)। वृत्तरत्नाकर में उक्ता, अत्युक्ता, मध्या तथा प्रतिष्ठा भेद से यह प्रस्तार विधि अनेक प्रकार की होती है (पाठक, 2015 तथा शर्मा, 1969)। प्रस्तार प्रत्यय वर्ण तथा मात्रा भेद से दो प्रकार का स्वीकार किया जा सकता है। एक अक्षर वाले छन्द का भेद जानने के लिए पहले गुरु लिखकर उसके नीचे एक लघु लिखना चाहिए। इस प्रकार एक अक्षर वाले छन्द के दो भेद हुए ।[6] अर्थात् जिस गण में सभी अक्षर गुरु हों, उस पाद में जो आदि गुरु हो, उसके नीचे लघु अक्षर का उल्लेख करना चाहिए। यथा–

एकाक्षर प्रस्तार

S	1
I	2

द्वयक्षर छन्द के भेदों का पता लगाने के लिए एकाक्षर प्रस्तार को दो बार लिखना चाहिए (द्विवेदी, 2009)। यथा–

द्वयक्षर प्रस्तार

SS	1
IS	2
SI	3
II	4

इस तरह द्वयक्षर छन्द के चार प्रस्तार हुए (द्विवेदी, 2009)।

---

[1] छन्दसां भेदादि–प्रत्यायकत्वात् प्रत्ययाः । (छन्दःसूत्र) पृष्ठ सङ्ख्या– 235.

[2] प्रतीयते संख्यादिकम् एभिस्ते प्रत्ययाः । (छन्दःसूत्र) पृष्ठ सङ्ख्या– 235.

[3] प्रस्तारो नष्टमुद्दिष्टम्, एकद्–व्यादि–लग–क्रिया ।
संख्या चौवाध्वयोगश्च षडेते प्रत्ययाः स्मृताः ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.1) ।

[4] पादे सर्वगुरावाद्याल्लघुं न्यस्य गुरोरधः ।
यथोपरि तथा शेषं भूयः कुर्यादमुं विधिम् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.2) ।
ऊने दद्याद् गुरूनेव यावत्सर्वलघुर्भवेत् ।
प्रस्तारोऽयं समाख्यातश्छन्दोविचितिवेदिभिः ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.3) ।

[5] प्रस्तीर्यते इति प्रस्तारः, वृत्तानां विस्तारतो विन्यासः ॥ (छन्दोऽनुशासन, पृ. 46, पं. 4, निर्णयसागर संस्करण 1912)।

[6] अग्निपुराण, अध्याय– 335.

नष्ट

नष्ट शब्द का अर्थ है– अज्ञात, अप्रकट या अव्यक्त है। किसी छन्द के अज्ञात भेद के स्वरूप का ज्ञान जिस प्रत्ययविधि के द्वारा होता है उसको नष्ट कहते हैं[7], अर्थात् किसी छन्द की किस सङ्ख्या का भेद किस प्रकार का होगा अर्थात् कौन–सा अक्षर गुरु है तथा कौनसा लघु है, कौन–कौन गणों का इस छन्द में प्रयोग हुआ हैं। जब यह जानने की इच्छा हो कि गायत्री या अन्य किसी छन्द के समवृत्तों में से छठा भेद कौन है तो फिर नष्ट संख्या को आधी करने पर जिस समय वह दो भागों में बराबर बँट जाय (2 = 11), तत्पश्चात् लघु लिखना चाहिए। यदि आधा करने पर विषम संख्या (6 = 33) आये तो उसमें 1 जोडकर (6 = 33, 31 = 4) समसंख्या बना लेने के बाद उसे पुनः आधा (31 = 4, 4 = 22) करना चाहिए। इस प्रकार एक गुरु अक्षर की प्राप्ति हो जाती है। जितने अक्षर वाले छन्द के भेद को समझना हो, उतने अक्षरों की पूर्ति होने तक उपरोक्त प्रणाली से गुरु–लघु का उल्लेख करते रहना चाहिये (द्विवेदी, 2009)। आधुनिक विद्वान् मधुसूधन ओझा ने अपने ग्रन्थ छन्दःसमीक्षा में नष्ट प्रत्यय के चार प्रकार बताये है।[8] नष्ट प्रत्यय के द्वारा किसी संख्या विशेष के ज्ञान से उस संख्या विशेष के स्वरूप को ज्ञात किया जाता है (ओझा, 1991)।

उद्दिष्ट

मधुसूधन ओझा ने अपने ग्रन्थ छन्दःसमीक्षा में इस प्रत्यय के विषय में बतलाया है कि उद्दिष्ट क्रिया के द्वारा किसी संख्या के स्वरूप विशेष के ज्ञान से संख्या विशेष का ज्ञान किया जाता है। इन्होंने उद्दिष्ट क्रिया को तीन प्रकार से परिभाषित किया है[9] (ओझा, 1991)। वृत्तरत्नाकर के अनुसार जब किसी छन्द के दिये हुए रूप की क्रम सङ्ख्या का बोध जिस प्रत्ययविधि के द्वारा होता है तब वह उद्दिष्ट कहलाता है।[10] अथवा किस छन्द का कौनसा भेद है इस प्रक्रिया का समाधान उद्दिष्ट के द्वारा किया जाता है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012)। यथा– किसी छन्द के गुरु–लघु वर्णों को क्रमशः एक पंक्ति में लिखकर और उनके ऊपर क्रमशः एक से लेकर उसके दुगने–दुगने अंक रखने चाहिए अर्थात् प्रथम पर एक, द्वितीय पर दो, तृतीय पर चार इस क्रमानुसार संख्याओं को रखना चाहिए। फिर केवल लघु अक्षरों के अंकों को जोड कर और उसमें एक और अंक मिला देने पर वही उत्तर आ जाता है।

सङ्ख्यान

संख्यान का अर्थ संख्या है अर्थात् जिस उपाय या विधि से बिना प्रस्तार के ही वृत्त की संख्या ज्ञात की जाती है तो उस विधि को संख्यान के नाम से जाना जाता है अथवा जिस विधि के माध्यम से छन्दों की पूर्ण सङ्ख्या का ज्ञान प्राप्त होता है उस विधि को सङ्ख्यान कहते हैं[11] (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)। इस क्रिया को करने से दो अंक की प्राप्ति होती है। इस विधि में शून्य (0) और दो (2) अंकों का उपयोग किया जाता है। इस विधि के माध्यम से जितने भी अक्षर के वृत्तों की संख्या जाननी हो तो उस संख्या के आधे भाग को निकाल देना चाहिए। उनके आधार पर उस वृत्त के भेदों का पता लगाया जाता है (द्विवेदी एवं सिंह, 2008)। यथा– हमें यह जानना है कि छः अक्षर वाले समवृत्त की संख्या क्या है। इसको इस रेखाचित्र से समझ सकते हैं–

अर्धस्थान	=	2	8 x 8	=	64
शून्यस्थान	=	0	4 x 2	=	8
अर्धस्थान	=	2	2 x 2	=	4
शून्यस्थान	=	0	1 x 2	=	2

अर्थात् छः अक्षर वाले समवृत्त की संख्या 64 है।

अध्वयोग

इस विधि के माध्यम से यह जाना जाता है कि किसी छन्द की सङ्ख्या को दुगुना करके एक घटा देने से जो शेष बचे, उसे छन्दःशास्त्र के विद्वानों ने अध्वयोग कहा है[12] अथवा प्रस्तार को लिखने का तरीका प्रदर्शित करने वाले मार्ग को अध्वयोग कहा गया है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972)। मधुसूधन ओझा ने अपनी पुस्तक छन्दःसमीक्षा में इस प्रत्यय को इस उदाहरण के द्वारा समझाने का प्रयास किया है। यथा– छः वर्ण वाले प्रस्तार की संख्या 64 है। इसकी दुगुनी संख्या 128 है। इसमें से 1 संख्या घटा देने पर 127 संख्या छःवर्ण वाले प्रस्तार का अध्वयोग है (ओझा, 1991)।

मेरु

एकद्वयादि लगक्रिया की सिद्धि के लिये मेरु प्रस्तार को जानना आवश्यक है। जब किसी छन्द में कितने लघु कितने गुरु और कितने वृत्त होते हैं। इस क्रिया को मेरु प्रस्तार से जाना जा सकता है। आधुनिक विद्वान् मधुसूधन ओझा कृत छन्दःसमीक्षा के अनुसार मेरु प्रत्यय को परिभाषित करते हुए कहा है कि जिस प्रत्यय के माध्यम से प्रस्तार के न्यासों में कितने वर्ण अदीर्घक कितने एक गुरु वर्ण वाले इत्यादि का तथा कितने अलघुक तथा एक लघु वाले वर्ण हैं। इन सभी वर्णों का ज्ञान होता है, उसे मेरु प्रत्यय कहते हैं (ओझा, 1991)।

इस प्रत्यय को तीन नियमों के माध्यम से समझा जा सकता है। इन तीन नियमों का अनुसरण करने पर ही मेरु प्रत्यय सिद्ध होता है। प्रथम नियम के अनुसार ऊपर की पंक्ति में स्थित दो अंकों की योजना से सिद्ध अंकों को ऊपर के दोनों अंकों के नीचे के स्थान में लिखा जाता है। द्वितीय नियम के अनुसार जहाँ यह नियम नहीं लगता, वहाँ नीचे की पंक्ति में एक अंक लिखना चाहिए। तृतीय नियम के अनुसार ऊपर की पंक्ति में जितने अंक स्थान हैं, नीचे की पंक्तियों में एक–एक अंकस्थान की वृद्धि वाले अंक स्थान बनाने चाहिए[13] (ओझा, 1991)।

एकद्वयादिलगक्रिया

किसी भी छन्द के चारों चरणों में कितने अक्षर लघु हैं और कितने गुरु हैं, यह जानने के लिये इस प्रत्यय की आवश्यकता पडती है। इसको इस तरह भी समझ सकते हैं यथा– प्रस्तारों के अनेक भेद प्राप्त होते हैं, उन भेदों में कितने लघु अक्षर होते हैं और कितने गुरु, इसको जानने के लिए एकद्वयादिलगक्रिया का उल्लेख किया है।[14] यदि सरल अर्थ में कहा जाये तो इस विधि से किसी भी

---

[7] नष्टस्य यो भवेदङ्कस्तस्यार्धेऽर्धे समे च लरू ।
विषमे चौकमादाय तस्यार्धेऽर्धे गुरुर्भवेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.4) ।

[8] छन्दःसमीक्षा पृ. 33.

[9] छन्दःसमीक्षा पृ. 34.

[10] उद्दिष्टं द्विगुणानङ्कानुपर्याद्यात् समालिखेत् ।
लघुस्थाने तु येऽङ्काः स्युस्तैः सैकैर्मिश्रितैः भवेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.5) ।

[11] लगक्रियाङ्कसन्दोहे भवेत् सङ्ख्याविमिश्रिते ।
उद्दिष्टाङ्कसमाहारः सैको वा जनयेदिमाम् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.8) ।

[12] सङ्ख्यैव द्विगुणैकोना सद्भिरध्वा प्रकीर्तितः ।
वृत्तस्याङ्गुलिकी व्याप्तिरधः कुर्यात्तथाङ्गुलिम् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.9) ।

[13] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 26.

[14] वर्णान् वृत्तभवान् सैकानौत्तराधर्यतः स्थितान् ।
एकादिक्रमतश्चौतानुपर्युपरि निक्षिपेत् ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.6) ।
उपान्त्यतो निवर्तेत त्यजेदेकैकमूर्ध्वत ।

छन्द के लघु–गुरु अक्षरों के विषय में जाना जाता है (उपाध्याय एवं त्रिपाठी, 2012 तथा शास्त्री, 1972) ।

मर्कटी

मधुसूधन ओझा कृत छन्दःसमीक्षा के अनुसार मर्कटी को मकडी भी कहते हैं। ऊर्णनाभि कीट (एक कीड़ा जो अपने शरीर से निकले हुए एक प्रकार के तंतुओं से जाला बनाकर उसमें छोटे कीटों आदि को फँसाता है मकड़ी का भोजन उसके जाल में फँसे हुए छोटे कीट होते हैं।) को मकडी कहते हैं। मकडी द्वारा बनाये गये चक्रजाल के समान ही इस मर्कटी प्रत्यय की संरचना होती है। इसमें 6 प्रकार की पंक्तियाँ होती हैं।

इनमें प्रथम पंक्ति से एक अक्षर, दो अक्षर, तीन अक्षर और चार अक्षर आदि प्रस्तारों का ज्ञान होता है। द्वितीय पंक्ति के द्वारा भिन्न–भिन्न प्रस्तारों के न्यासों का ज्ञान होता है। यथा– एक अक्षर प्रस्तार में दो न्यास, दो अक्षर प्रस्तार में 4 न्यास, तीन अक्षर प्रस्तार में 8 न्यास और दस अक्षर प्रस्तार में 1024 न्यास इत्यादि। तृतीय पंक्ति के माध्यम से अलग–अलग प्रस्तारों में कितनी मात्रायें होती हैं इसका ज्ञान किया जाता है। यथा– एक अक्षर प्रस्तार में 3 मात्रायें, दो अक्षर प्रस्तार में 12 मात्रायें तथा दस अक्षर प्रस्तार में 15360 मात्रायें इत्यादि (ओझा, 1991)। चतुर्थ पंक्ति के द्वारा विभिन्न प्रस्तारों की अक्षर समष्टि को ज्ञात किया जाता है। यथा– एक वर्ण प्रस्तार में दो अक्षर, दो वर्ण प्रस्तार में 8 अक्षर, तीन वर्ण प्रस्तार में 24 अक्षर होते हैं। चार अक्षर वाले प्रस्तारों में कितने–कितने वर्ण हैं इसका ज्ञान चतुर्थ पंक्ति के द्वारा होता है। पञ्चम पंक्ति के माध्यम से अलग–अलग प्रस्तारों में कितने–कितने दीर्घ वर्ण हैं इसका ज्ञान होता है। षष्ठ पंक्ति द्वारा अलग–अलग प्रस्तारों में कितने–कितने लघु वर्ण हैं इसका ज्ञान होता है[15] (ओझा, 1991)।

शलाका

पण्डित मधुसूदन ओझा अनुसार जिस प्रत्यय क्रिया के द्वारा मेरु स्थित एक–एक प्रस्तारों की स्वतन्त्र सिद्धि की जाये तो उसे शलाका के नाम से जाना जाता है। शलाका लगक्रिया, लघुक्रिया एकावली, मेरुक्रिया ये सभी समान अर्थ वाले शब्द हैं। जितने अक्षर वाले प्रस्तार में लगक्रिया को करना है उससे एक अधिक संख्या वाले एकांक लिखने चाहिये। तत्पश्चात् पूर्व–पूर्व अंकों के योग से निष्पन्न उत्तर–उत्तर अंकों को बदल कर अर्थात् नीचे से ऊपर की ओर लिखना चाहिये। पुनः इसी प्रकार आदि से इस क्रिया की आवृत्ति करनी चाहिये। प्रत्येक क्रिया में एक–एक अंक का अन्त में परित्याग कर देना चाहिये[16] (ओझा, 1991)।

पताका

मेरु तथा शलाका प्रत्यय के माध्यम से प्रस्तार के जिन अवान्तर भेदों की संख्या का ज्ञान होता है, उन भेदों के स्थान का ज्ञान पताका के द्वारा किया जाता है। इस प्रत्यय का पताका के आकार से उल्लेख होने के कारण इसको पताका कहा जाता है[17] (ओझा, 1991)।

सूचीप्रत्यय

सूची प्रत्यय में प्रस्तार संख्याओं की क्रमानुसार एक सूची तैयार की जाती है। जिसमें 1 संख्या से आरम्भ तत्पश्चात् उत्तरोत्तर दुगुना अंक 1, 2, 4, 8, 16 इस प्रकार लिखे जाते हैं उसे सूची प्रत्यय कहते हैं । उन दुगुणित अंकों में अन्तिम अंक से प्रस्तार संख्या का ज्ञान होता है[18] (ओझा, 1991)।

मात्राप्रत्यय

मात्रा प्रत्यय के माध्यम से किसी मात्रिक वृत्त में मात्राओं की कुल संख्या को ज्ञात किया जाता है। यह दो प्रकार का होता है– लघु अक्षर और गुरु अक्षर लघु (।) अक्षर की एक मात्रा तथा गुरु (ऽ) अक्षर की दो मात्रायें होती है। अतः गुरु (ऽ) मात्रा को दुगुना कर लघु (।) मात्रा संख्या का उसमें योग करने से मात्राओं की पूर्ण संख्या का ज्ञान हो जाता है। यथा– चार अक्षर वाले प्रस्तार में 32 गुरु (ऽ) मात्रायें हैं। इनको दुगुना कर 32 लघु (।) मात्राओं का योग करने पर 64 मात्रायें चार अक्षर वाले प्रस्तार में हैं[19] (ओझा, 1991)।

पिण्डप्रत्यय

जिस प्रकार प्रस्तार प्रत्यय में मात्राओं के संकलन में सभी गुरु और लघु मात्राओं का लघुमात्रा में परिवर्तन कर मात्राओं की गणना है उसी प्रकार सभी गुरु–लघु मात्राओं का गुरु मात्रा रूप में परिवर्तन कर उनका लेखन पिण्ड प्रत्यय कहलाता है। इसीलिए नियम से मात्रा संख्या की अर्धसंख्या पिण्ड कहलाती है। यथा– चार अक्षर वाले प्रस्तार में मात्रा संख्या 96 है। इसकी अर्धीकृत संख्या 48 पिण्ड कहलाती है[20] (ओझा, 1991)।

इस प्रकार पं. मधुसूदन ओझा ने अपने ग्रन्थ छन्दःसमीक्षा में प्रस्तारादि विधियों का विस्तार से वर्णन किया है। इन्होंने अपनी कृति के छन्दोगणितीय अंग में छन्द को सूक्ष्म दृष्टि से समझने में सहायक प्रस्तार आदि प्रत्ययों तथा उनके भेद–प्रभेदों के माध्यम से गणितीय दृष्टि से समझाने का प्रयास किया है। इसी क्रम में आचार्य केदारभट्ट ने भी अपनी कृति वृत्तरत्नाकर में प्रत्ययों का विवेचन किया है। प्रस्तार, नष्ट आदि गणितीय विधियों को छन्द से सम्बन्धित यथा छन्दःसूत्र, छन्दोमञ्जरी, प्राकृतपैंगलम्, अग्निपुराण, नारदीयपुराण, विष्णुधर्मोत्तरपुराण तथा छन्दःकौस्तुभ ग्रन्थों में विस्तार से समझाया गया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, बलदेव. 1969. संस्कृत शास्त्रों का इतिहास. शारदा मन्दिर. वाराणसी।
2. ओझा, मधुसूदन, 1991. छन्दःसमीक्षा. प्रकाशक राजस्थान संस्कृत अकादमी. जयपुर. राजस्थान।
3. त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (सम्पा.) एवं उपाध्याय, बलदेव (सम्पा.). 2012. वृत्तरत्नाकरः. चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।
4. द्विवेदी, कपिलदेव (अनु.) एवं सिंह, श्यामलाल (अनु.). 2008. पिङ्गल कृत छन्दःसूत्रम्. विश्वविद्यालय प्रकाशन. वाराणसी।
5. पाठक, चित्तनारायण (सम्पा.). 2015. छन्दःशास्त्रम् (मृतसञ्जीविन्याख्य). चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।
6. मिश्र, श्रीकिशोर. 2006. छन्दश्शास्त्र का उद्भव एवं विस्तार. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय. वाराणसी।
7. शर्मा, अयोध्यानाथ (सम्पा.). 1969. पिङ्गलच्छन्दःसूत्रम्. चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन. वाराणसी।
8. द्विवेदी, शिवप्रसाद. 2009.*अग्निपुराणम्.* चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान. दिल्ली।

उपर्याद्याद् गुरोरेवमेकद्वयादिलगक्रिया ॥ (वृत्तरत्नाकर– 6.7) ।

[15] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 33.

[16] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 72.

[17] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 45.

[18] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 67.

[19] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 55.

[20] छन्दःसमीक्षा, पृष्टसंख्या– 69.

9. ख्रिस्ते, नारायण शास्त्री. 1972. छन्दःकौमुदी. चौखम्भा संस्कृत संस्थान. वाराणसी।
10. गोयल, प्रीतिप्रभा. 1998. संस्कृत साहित्य का इतिहास. राजस्थानी ग्रन्थागार. जोधपुर।
11. चटर्जी, अशोक (सम्पा.). 1987. पिङ्गलछन्दस्सूत्र. कलकत्ता विश्वविद्यालय. कलकत्ता।
12. वाद, रामपाणि (सम्पा.).1937. वृत्तवार्तिक. अनन्तशयन संस्कृत ग्रन्थावली. त्रिवेन्द्रम्।
13. शेखर, रत्न. 1962. छन्दःकोश. राजपुरातन ग्रन्थमाला. जोधपुर।
14. शेवडे, वसन्त त्र्यम्बक (सम्पा.) एवं त्रिपाठी, ब्रह्मानन्द (व्याख्या.). 1989. वृत्तमञ्जरी (सुषमा टीका). चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन. वाराणसी।
15. सहाय, राजवंश. 1996. संस्कृत साहित्य कोश. चौखाम्बा विद्याभवन. वाराणसी।
16. अभिमन्यु, मन्नालाल (सम्पा.). 2012. अमरकोष. चौखम्बा विद्याभवन. वाराणसी।